OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:18 PM Page 4

परमात्म शांतिदूत फरिश्ता बन उड़ चली

दादी हृदयमोहिनी के बचपन का नाम शोभा था। आपका जन्म वर्ष 1928 में कराची में हुआ था। आप जब आठ वर्ष की थीं तब संस्था के साकार संस्थापक ब्रह्मा बाबा द्वारा खोले गए ओम निवास बोर्डिंग स्कूल में दाखिला लिया। यहाँ आपने चौथी कक्षा तक पढ़ाई की। स्कूल में बाबा और मम्मा(संस्थान की प्रथम मुख्य प्रशासिका) के स्नेह, प्यार और दुलार ने इतना प्रभावित किया कि छोटी-सी उम्र में ही अपना जीवन उनके समान बनाने का निश्चय किया। वहीं आपकी लौकिक माँ भक्ति-भाव से परिपूर्ण थीं।

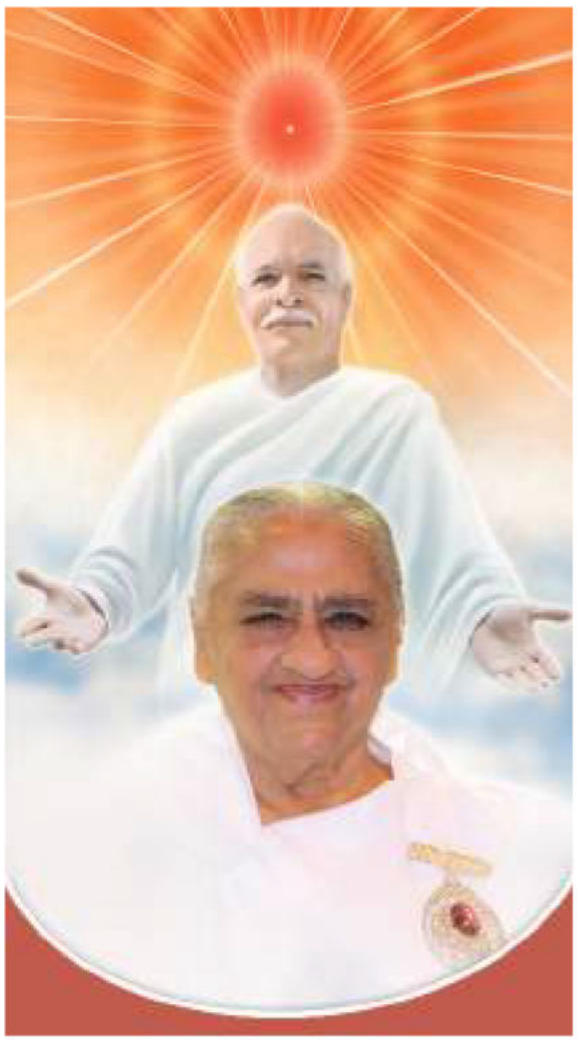

- **दिव्य दृष्टि का था वरदान, 1969 से 2016 तक परमात्मा के संदेशवाहक की निभाई भूमिका**
- **एक साल पहले दादी जानकी जी के निधन के बाद नियुक्त की गई थीं ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका**
- **आठ साल की उम्र में ब्रह्मा बाबा द्वारा खोले गए बोर्डिंग स्कूल में लिया था प्रवेश**
- **वर्ष 1928 में कराची में हुआ था जन्म, मात्र चौथी कक्षा तक की थी पढ़ाई**
- **हिन्दी-अंग्रेजी और गुजराती भाषा का था ज्ञान**
- **विश्व के कई देशों में दिया आध्यात्मिकता का संदेश**
- **नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय ने 2017 में डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की उपाधि से किया था विभूषित**

छोटी आयु में ही हुआ था दिव्य साक्षात्कार

तीक्ष्ण बुद्धि होने से वे जब भी ध्यान में बैठतीं तो शुरुआत के समय से ही दिव्य अनुभूतियां होने लगीं। यहाँ तक कि कई बार ध्यान के दौरान दिव्य आत्माओं के साक्षात्कार भी हुए, जिनका ज़िक्र उन्होंने ध्यान के बाद ब्रह्मा बाबा और अपनी साथी बहनों से भी किया।

शांति, गंभीर और गहन व्यक्तित्व की प्रतिमूर्ति

दादी हृदयमोहिनी की सबसे बड़ी विशेषता थी उनका गंभीर व्यक्तित्व। वे गहन चिंतन की मुद्रा में हमेशा रहतीं। धीरे-धीरे उम्र के साथ जब दादी मात्र 8-9 वर्ष की थीं तब से उन्हें दिव्य लोक की अनुभूति होने लगी। उनकी बुद्धि की लाइन इतनी साफ और स्पष्ट थी कि ध्यान में जब वें खुद को आत्मा समझकर परमात्मा का ध्यान करतीं तो उन्हें यह आभास ही नहीं रहता था कि वह इस ज़मीन पर हैं।

दादीजी को कभी हलचल में व उदास नहीं देखा

निजी सचिव व वर्ष 1985 में 15 साल की उम्र से दादी के साथ रहीं नीलू बहन ने बताया कि मैं खुद को भाग्यशाली समझती हूँ कि मुझे बचपन से ही दादीजी के अंग-संग रहने का सौभाग्य मिला। दादीजी हॉस्पिटल में भर्ती होने के बाद भी कभी उनको मन से विचलित या परेशान होते नहीं देखा। बीमारी की स्थिति में भी उनका चेहरा और मन सदा परमात्मा के ध्यान में लगा रहता था।

दादी हृदयमोहिनी हमेशा साढ़े तीन बजे उठ जाती थीं और डेढ़ से दो घंटे तक साधना का दौर चलता था। इसके बाद आध्यात्मिक अध्ययन। उनकी खासियत थी कि वे हमेशा ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान में और चुप रहती थीं। जीवन में कभी किसी बात को लेकर इच्छा जागृत नहीं हुई।

वे हमेशा 4 बजे सुबह दिव्य दृष्टि के ज़रिए अंतरध्यान हो जाती थीं। महिलाओं को लेकर उनकी हमेशा यही भावना और उद्देश्य होता कि प्रत्येक महिला शक्ति के रूप में जागृत हो। जब भी वे किसी महिला को देखतीं तो यही कहती थीं कि आप शक्ति हैं और दुर्गा स्वरूपा। वे हमेशा यही कहती थीं कि जब मैं कर सकती हूँ तो आप लोग क्यों नहीं! वे हमेशा एक स्मरण का ज़िक्र करते हुए उदाहरण देती थीं कि 1950 के बाद जब वे भारत आईं तो अचानक से एक दिन शाम चार बजे ब्रह्मा बाबा ने उन्हें लखनऊ में सेवा में जाने को कहा। उन्होंने कहा कि उस दौरान कुछ भी तय नहीं था कि कहाँ जाना है और कैसे जाना है। लेकिन ब्रह्मा बाबा पर ऐसा भरोसा था कि उनका कहना और हमारा करना। फिर हम लखनऊ के लिए रवाना हो गए। वहाँ जाने के बाद राजभवन में जाने का मौका मिला और वहीं से उत्तरप्रदेश में सेवाओं का विस्तार हुआ।

सादगी, सरलता और सौम्यता की थीं मिसाल

दादी का पूरा जीवन सादगी, सरलता और सौम्यता का मिसाल रहा। बचपन से ही विशेष योग-साधना के चलते दादी का व्यक्तित्व इतना दिव्य हो गया था कि उनके सम्पर्क में आने वाले लोगों को उनकी तपस्या और साधना की अनुभूति होती थी। उनके चेहरे पर तेज का आभामंडल उनकी तपस्या की कहानी साफ बयां करता था।

1969 में ब्रह्मा बाबा के निधन के बाद बनीं परमात्म दूत

18 जनवरी 1969 में संस्था के संस्थापक ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद परमात्म आदेशानुसार दादी हृदयमोहिनी ने परमात्म संदेशवाहक और दूत बनकर लोगों के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और दिव्य प्रेरणा देने की भूमिका निभाई। दादीजी ने 2016 तक संस्थान के मुख्यालय माउण्ट आबू में हर वर्ष आने वाले लाखों भाई-बहनों को परमात्मा का दिव्य संदेश देकर योग-तपस्या बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। एक बार चर्चा के दौरान दादीजी ने बताया कि जब मैं मन की शक्ति से वतन में जाती हूँ तो आत्मा तो शरीर में रहती है लेकिन मुझे इस शरीर का भान नहीं रहता। उस दौरान मेरे द्वारा जो वचन उच्चारित होते हैं वह भी मुझे याद नहीं रहते।

बाबा से दादीजी को हुए थे साक्षात्कार

एक साक्षात्कार के दौरान दादी ने बताया था कि जब वह 9 वर्ष की थीं और अपने मामा के यहां गई थीं, तभी उनके घर ब्रह्मा बाबा का आना हुआ। यहाँ बाबा से उन्हें दिव्य साक्षात्कार हुआ था। बाबा हम बच्चों का इतना ख्याल रखते थे कि खुद अपने हाथ से दूध में काजू-बादाम डालकर खिलाते थे। बाबा का प्यार, स्नेह इतना मिला कि कभी भी लौकिक माँ-बाप की याद नहीं आई।

14 साल तक सिंध हैदराबाद में रहकर की कठिन साधना

दादी हृदयमोहिनी ने 14 वर्ष तक बाबा के सानिध्य में रहकर कठिन योग-साधना की। इन वर्षों में खाने-पीने को छोड़कर दिन-रात योग-साधना में वह लगी रहती थीं। इसके साथ ही बाबा एक-एक सप्ताह मौन कराते थे। तभी से दादी का स्वभाव बन गया था कि जितना काम हो उतना ही बात करती। अंत समय तक वह इसी स्थिति में रहीं।

नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय ने प्रदान की डिग्री

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी को नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय, बारीपदा ने डी.लिट(डॉक्टर ऑफ लिटरेचर) की उपाधि से विभूषित किया है। दादी को यह उपाधि उड़ीसा में प्रभु के संदेशवाहक के रूप में लोगों में आध्यात्मिकता का प्रचार-प्रसार करने और समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान पर प्रदान की गई। संस्था की 80वीं वर्षगांठ पर मुख्यालय माउण्ट आबू,आबू रोड के शांतिवन में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन एवं सांस्कृतिक महोत्सव में 28 मार्च 2017 को नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्रा ने उपाधि प्रदान की। उन्होंने दादी के कार्यों की सराहना करते हुए इसे गौरव का विषय बताया था। कुलपति मिश्रा ने कहा था कि यह डिग्री देते हुए बहुत ही गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। संस्था विश्व शांति, प्रेम, भाईचारा और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में जो कार्य कर रही है वह अनुपम उदाहरण है।

माननीय भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को रक्षासूत्र बांधते हुए दादी हृदयमोहिनी जी।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ दादी हृदयमोहिनी जी।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी जी को शिव स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए दादी हृदयमोहिनी जी।

दादी हृदयमोहिनी जी का अभिवादन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा जी।

आध्यात्मिक कार्यक्रम में कैंडल लाइटनिंग करते हुए मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी जी,भारत के उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत जी।

दादी जानकी के निधन के बाद बनी थीं मुख्य प्रशासिका

पिछले साल 27 मार्च 2020 को संस्थान की मुख्य प्रशासिका 104 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी जी के निधन के बाद उनको संस्थान की मुख्य प्रशासिका नियुक्त किया गया था। अस्वस्थ होने के बाद भी उनमें दिन-रात लोगों का कल्याण करने की भावना लगी रहती थी। दादीजी मुम्बई से ही संस्थान की गतिविधियों का सारा समाचार लेतीं और समय प्रति समय निर्देशन देतीं।